॥ ओउम् ॥

॥ शिवभक्त महापुराण ॥

भोग और मोक्ष प्रदाता...

रचयिता : श्री संतोष कुमार गुप्ता

पुत्र : श्रीमती ज्ञान देवी एवं श्री केदार नाथ

शिवभक्त न्यास, काशी खण्ड- चुनार, भारत

Call : 09580-321-500 ; E - mail : shivbhaktt@gmail.com

॥ अनुक्रमणिका ॥

विषय | पृष्ठ सं.

॥ अध्याय - द्वितीय ॥

विषय	पृष्ठ सं.
1. परमेश्वर - स्तुति	27
2. अमृतरस	28
3. कर्ज और फर्ज	29
4. एक राजा और सारी प्रजा	31
5. समय महान है।	32
6. शिव वाणी	34
7. माता पार्वती का पति धर्म	35
8. सत्य वचन	37
9. शिवभक्त विष्णु	38
10. गुरू जी की वाणी - 'यथार्थ गीता'	39
11. कदम दो कदम, चले प्रभु की ओर	42
12. हम होंगे कामयाब	43
13. कुरआन शरीफ की आयतें	44
14. प्रभु आइये	46

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

॥ शिवभक्त महापुराण ॥

भोग और मोक्ष प्रदाता ...

॥ परमेश्वर - स्तुति ॥

त्वमेव माता प पिता त्वमेव

त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव

त्वमेव सर्व मम देवदेव ॥

॥ अमृतरस ॥

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

जलदान सबसे श्रेष्ठ है। वह सब दानों में सदा उत्तम है, क्योंकि जल सभी जीव समुदाय को तृप्त करने वाला जीवन कहा गया है।

पानीयदानं परमं दानानामुत्तमं तदा।

सर्वेषां जीवपुंजानां तर्पणं जीवनं स्मृतम् ॥

अष्टमूर्तिः- जल,अग्नि,वायु,आकाश,सूर्य,चन्द्रमा,पृथ्वी और यजमान ये आठ नामों में से एक जल नाम भी शिव जी का नाम है।

गंगाप्लवोदक :- गंगा के प्रवाहरूप जल को सिर पर धारण करने वाले शिव जी है।

क्लेदनं पिण्डनं तृप्तिः प्राणनाप्यायनोन्दनम्।

तापापनोदो भूयस्त्वमम्भसो वृत्तयस्त्विमाः ॥

गीला करना,मिटटी आदि को पिण्डाकार बना देना, तृप्त करना, जीवित रखना, प्यास बुझाना पदार्थो को मीठा करना, ताप को खत्म करना और कुएँ आदि से निकाल लिए जाने पर भी वहाँ बार बार पुनः प्रकट हो जाना - ये जल के गुण है।

मनुष्यों को ही नहीं पेड़ - पौधे, जीव - जन्तु सभी को जल की जरूरत है। जब समुद्र मंथन से विष निकला तब शिवजी ने कहा-

अहो बत भवान्येतत् प्रजानां पश्य वैशसम्।

क्षीरोदमथनोद्भूतात् कालकूटादुपस्थितम् ॥

आसां प्राणपरीप्सूनां विधेयमभयं हि मे।

एतावान्हि प्रभोरर्थो यद् दीनपरिपालनम् ॥

देवि ! यह बड़े खेद की बात है। देखो तो सही ,समुद्र मंथन से निकले कालकूट विष के कारण प्रजा पर कितना बड़ा दुःख आ पड़ा है।

ये बेचारे किसी प्रकार अपने प्राणों की रक्षा करना चाहते है। इस समय मेरा यह कर्तव्य है कि मैं इन्हें निर्भय कर दूँ। जिनके पास शक्ति - सामर्थ्य है, उनके जीवन की सफलता इसी में है कि वे दीन - दुःखियों की रक्षा करें।

भगवान शंकर बड़े कृपालु है। उन्हीं की शक्ति से समस्त प्राणी जीवित रहते है। उन्होंने उस तीखे हलाहल विष को अपनी हथेली पर उठाया और भक्षण कर गये। वह विष जल का पाप - मल था। उसने शंकर जी पर भी अपना प्रभाव प्रकट कर दिया , उससे उनका कण्ठ नीला पड़ गया , परन्तु वह तो प्रजा का कल्याण करने वाले भगवान शंकर के लिए भूषणरूप हो गया।

इस प्रकार शिवजी का नाम नीलकंठ महादेव पड़ा। भक्तों की रक्षा करने के लिए स्वयं विष पीकर भक्तों को अमृतरस दिये।

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

आज भी करोड़ों भक्तजन अमृतरस की चाह में कुम्भ स्नान करने जाते है और अमृतरस पीते है। अमृतरस ही जल है। जल ही माँ गंगा है। माँ को बचाये।

॥ जल सुरक्षित अमृतरस सुरक्षित ॥

॥ कर्ज और फर्ज ॥

मनुष्य के तीन ऋण होते है - भगवान का ऋण, माँ - बाप का ऋण और गुरु का ऋण।

मनुष्य का सबसे पहला ऋण है, भगवान का ऋण क्योंकि जब भगवान ने चाहा तभी मनुष्य पृथ्वी पर जन्म लिया। बिना भगवान की अनुमति के एक पत्ता भी नहीं हिलता है।

जब जीव को मनुष्य शरीर में जन्म लेना होता है, तो वह भगवान की प्रेरणा से पुरुष के वीर्य द्वारा स्त्री के उदर में प्रवेश करता है। वहाँ एक रात में कलल , पाँच रात में बूँद, दस दिन मे बेर के समान बन जाता है। एक माह में सिर निकलता है, दो माह मे हाथ - पाँव और तीन माह में नाखून, रोएँ, स्त्री- पुरुष के चिन्ह निकलते है।

चौथे महीने मे मांस आता है। पाँचवे महीने में भूख - प्यास लगती है और छठे महीने में दाहिनी कोख मे घूमने लगता है। वह जीव माता के गर्भाशय में लिपटा हुआ सिर पेट की ओर और पीठ और गर्दन कुण्डली मारकर नरक की स्थिति में रहता है। जब सातवां माह शुरु होता है तो उसे पिछले जन्म में किये हुए कर्म याद आते हैं। और वह प्रभु से हाथ जोड़कर स्तुति करता है, जिसने उसे गर्भ मे डाला है।

जीव भगवान से कहता है। मैं माता के उदर के भीतर मल- मूत्र के कुएँ में गिरा हुआ हूँ। मुझे क्षमा कीजिए। मुझे इस नरक से निकालिए। मैं बाहर आकर आपकी ही सेवा करुँगा , आपका ही गुणगान करुँगा। लेकिन जब पृथ्वी पर आता है, तो सब कुछ भूल जाता है।

अतः मनुष्य का पहला फर्ज है कि वह भगवान के ऋण को चुकाने की कोशिश करे। कम से कम प्रभु का नाम तो ले ले।

दूसरा कर्ज है माँ - बाप का क्योंकि भगवान सब जगह नही जा सकते थे , इसलिए उसने 'माँ' बनाया। मनुष्य को माँ - बाप दिया जो जीवन भर उसकी सेवा करते है, लेकिन जैसे - जैसे जीव बड़ा होता जाता है वैसे - वैसे माँ - बाप को भूलता जाता है। बिना माँ - बाप के मनुष्य की पहचान ही क्या है ?

एक बार सब जगह सूखा पड़ गया था, पृथ्वी पर कहीं भी पानी न बचा था, यहाँ तक कि पेड़ - पौधे भी सूख गये थे। तब सब लोग माँ (दुर्गा) के पास गये और बोले कि माँ बालकों से पग- पग पर अपराध बनता ही रहता है। केवल माता के समान संसार में दूसरा कौन है जो उस अपराध को सहन करता हो। उस समय प्रजा के कष्टों को देखकर माँ लगातार नौ दिन और नौ रात (नवरात्रि) तक रोती रही। उन आँसूओं से जल की हजारों धाराएँ निकली और सब जगह पानी आ गया। पेड़ - पौधे में फल - फूल आ गये सभी लोग तृप्त हो गये। यही कारण है कि नवरात्रि के समय प्रकृति में बदलाव दिखाई देने लगते है। अतः माँ ऐसी होती है। माँ का आदर करे। माँ की सेवा करे यही मनुष्य का दूसरा फर्ज है।

तीसरा कर्ज है - गुरुजी का क्योंकि गुरु ही ब्रह्मा,विष्णु और महेश्वर के रुप में है। बिना भगवान की कृपा के मनुष्य को अच्छे गुरु नहीं मिलते।

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II

गुरू जी तो अपने शिष्यों को मोक्ष का रास्ता दिखाते है। बिना गुरू के तो मनुष्य का सारा कर्म ही व्यर्थ है। इसलिए एक अच्छे , ज्ञानी और तत्त्वदर्शी को ही अपना गुरू बनाये। गुरू की सेवा करे। गुरू के रास्ते पे चले। क्योंकि गुरू किसी को शिष्य नहीं बनाता बल्कि उसे गुरू ही बना देता है।

गुर्रुब्रह्मा गुरूर्विष्णुः गुरूदैवो महेश्वरः।

गुरू साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरूवे नमः॥

इस प्रकार मनुष्य के 3 कर्ज होते है और इन्हीं कर्ज को उतारने की कोशिश करे अगर तीनों कर्ज उतर जाये तो यह मनुष्य जन्म सफल है। मनुष्य को कम से कम एक कर्ज - माँ - बाप या भगवान या गुरू का में से कोई एक तो अवश्य उतारने की कोशिश करना चाहिए अन्यथा मनुष्य , मनुष्य रूप में राहु है जो सूर्य और चन्द्रमा को ग्रहण के रूप में डँसता है।

॥ भगवान , माँ - बाप और गुरू की सेवा करें॥

॥ एक राजा और सारी प्रजा॥

राज्ञः सर्वत्र पूज्यते ,अर्थात् राजा सब जगह पूजा जाता है। राजा को एक चींटी की भी सुरक्षा करनी चाहिए। उसे अपने देश के सभी लोंगो की हिफाजत करनी चाहिए। राजा को चाहिए कि वह धर्म का प्रचार करे। अधर्मी का साथ न दे। राजा को न्यायप्रिय होना चाहिए। जिस देश का राजा न्यायप्रिय होता है उस देश के फल भी मीठे होते है। अगर देश में धर्म का प्रचार होगा तो प्रजा के पुण्य का 1/6 भाग राजा को प्राप्त होता है। जिस देश का राजा अच्छा है तो उस देश की प्रजा भी अच्छी होगी। जैसी राजा वैसी प्रजा।

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II

राजा के ऊपर पृथ्वी की सुरक्षा का भार होता है। जरूरत पड़ने पर वह गलत लोगों को दण्ड भी दे जैसे की भगवान शनि देव दण्ड देते है। अन्यथा दूसरे देश के राजा आक्रमण कर उस देश को पापयुक्त बना देगे।

राजा का पद इन्द्र का पद होता है राजा अपने प्रजा के सुझाव का सम्मान करे। कर को अधिकतर करने के बजाय अन्य जरूरी करों को प्रोत्साहित करे। कर से ही लोगो को न मारे राजा के मंत्री भी राजा समतुल्य है। उन्हें भी न्यायप्रिय, विवेकशील, स्वतंत्र होना चाहिए। ईर्ष्यावश अधिक कर आरोपित कर व्यापारी समुदाय को व्यापार बन्द करने पर विवश न करे। अगर मुर्गी सोने का एक अण्डा प्रतिदिन दे रही है तो उसके पेट काटने पर तो राजा का नुकसान ही होगा । बेटियों की सुरक्षा करे। सिर्फ किसी व्यक्ति को इधर - उधर करने से व्यक्ति का स्वभाव नही बदलता। एक थाली की रोटी दूसरी थाली में न करे ,बल्कि दूसरी रोटी पैदा करें। सेवकों के अपराध करने पर संसार उनके स्वामी का ही नाम लेता है।

राजा को भगवान राम जैसा कार्य करना चाहिए न कि घमंडी रावण जैसा। राजा भरत ,श्री राम ,राजा परीक्षित तो आज भी अपने पुण्य कर्मो द्वारा सर्वदा पूजे जाते है।

प्रजा को चाहिए कि वह राजा का सम्मान करें। हर वक्त राजा को दोष देना अच्छी बात नहीं है। अगर राजा त्यागपत्र दे दें तो देश में चोर - डाकुओं की बाढ आ जायेगी। कोई सुरक्षित नहीं रहेगा। अधर्म की बढ़ोतरी हो जायेगी राजा के अच्छे कार्यो को ग्रहण करे और गलत कार्यो मे उसका साथ न दे बल्कि रोके। पाप न सहे पाप करने से रूके और दूसरों को भी रोके। अगर राजा अधर्मी हो जाये तो उसका तिरस्कार करे दें।

सभी जीवो में सिर्फ मनुष्य ही नियमों का उल्लंघन करता है। मनुष्य योनि तो देवताओं को भी दुर्लभ है। मनुष्य से भगवान बने , न कि शैतान। सदा सत्य बोले। 'सत्याग्रह' - सत्य के लिए आग्रह करे। दूसरों से सत्य बोलने के लिए निवेदन करे , आज तो लोग अपना नाम , पता भी सत्य नहीं बताते।

एक परमात्मा है। वह हमें कर्मो का फल अवश्य देता है, यह जानते है तो मानते क्यूँ नहीं ? अच्छे कर्म करे। चोर को देखकर चोर न बने। आजकल के चोर तो मंदिर से भगवान को भी चुरा लेते है, क्या इसका फल उन्हें जीवन में नहीं मिलता है ?

'' कर्मो का फल अवश्य मिलता है।''

II SHIVBHAKT MAHAPURAN II

राजा को पुरूषोत्तम भगवान राम जैसा होना चाहिए। प्रजा को राजा की पूजा करनी चाहिए।

॥ समय महान है। ॥

यामाश्चत्वारश्चत्वारो मर्त्यानामहनी उभे। पक्षः पंचदशाहानि शुक्लः कृष्णश्च मानद॥

तयोः समुच्चयो मासः पितृणां तदहर्निशम्। द्वौ तावृतुः षडयनं दक्षिणं चोत्तरं दिवि॥

अयने चाहनी प्राहुर्वत्सरो द्वादशः स्मृतः। संवत्सरशतं नृणां परमायुर्निरूपितम्॥

चार - चार पहर के मनुष्य के दिन और रात होते है। और पन्द्रह दिन - रात का एक पक्ष होता है जिसे शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष कहा जाता है। इन दोनों पक्षों को मिलाकर एक मास होता है जो पितरों का एक दिन - रात होता है। दो मास का एक ऋतु और छः मास का एक अयन होता है। अयन दो होता है - दक्षिणायन और उत्तरायन। ये दोनों अयन मिलकर देवों के एक दिन - रात होते है। मनुष्य लोक में ये एक वर्ष कहे जाते है। ऐसे सौ वर्ष की मनुष्य की परम आयु बतायी गयी है।

कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य अगर एक वर्ष तक पूजा कर्म करे तो वह भगवान के एक दिन - रात की पूजा हुई।

जिसका समय भगवान के गुणों के गान अथवा सुनने में व्यतीत हो रहा है, उसके अतिरिक्त सभी मनुष्यों की आयु व्यर्थ जा रही है। ये भगवान सूर्य प्रतिदिन अपने उदय और अस्त से उनकी आयु छीनते जा रहे है।

जब समय के फेर से लोगों की समझ कम हो जाती है, आयु भी कम होने लगती है। उस समय जब भगवान देखते है कि अब ये लोग मुझे (भगवान) समझने में असमर्थ हो रहे है तब ये व्यास के रूप में प्रकट होते है।

जो व्यक्ति समय का कद्र नहीं करता, उस व्यक्ति की समय भी कद्र नहीं करता। समय से आगे चलने की कोशिश करें। समय से आगे चलने वाला भगवान, समय के साथ चलने वाला इंसान और समय के पीछे - पीछे चलने वाला शैतान होता है।

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II

आज लोगों के पास करोड़ों , अरबों रूपये है लेकिन समय नहीं है। समय रूपये पैसे से भी महान है। समय का दुरूपयोग नहीं ,समय का सदुपयोग करें।

मनुष्य के पास एक दिन में आठ प्रहर है सिर्फ भगवान के लिए एक प्रहर ही काफी है। जिस व्यति का समय भगवान की सेवा में लगा रहता है उस व्यक्ति का समय महान है।

आज अगर किसी चीज की कमी है तो वह समय की। समय बहुतों के पास नहीं है। अगर लोगों के पास यमराज भी आ जाये तो लोग कहेगे कि रूकिये अभी मैं यह काम करके आ रहा हूँ।

एक पुष्पवाटिका में अपनी हरिनी के साथ विहार करता हुआ एक हरिन मस्त घूम रहा है, वह दूब आदि छोटे- छोटे अंकुरों को चर रहा है। उसके कान भौरों के मधुर गुंजार में लगे है। उसके पीछे एक शिकारी ने अपना बाण छोड़ दिया है लेकिन हरिन को इसकी सुध नहीं है।

अगर हरिन आप, हरिनी आपकी पत्नी और पुष्पवाटिका आपका घर , शिकारी वह समय यानि कालमृत्यु जिसने बाण छोड़ दिया है तब आप उस समय से बच पायेंगे ? नहीं ...

कबीर दास ने लिखा है कि -

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।

पल में प्रलय होयेगी बहुरी करोगे कब ॥

जो काम बुढ़ापा मे करना है उसे आज और अभी से शुरू कर दे। कल का इन्तजार न करे। कल किसी ने देखा है ? प्रभु का नाम शिव , राम , ओम ,नबी,सांई, ईसा (ढाई आखर प्रेम का) का नाम प्रेम से अभी से लेना शुरू करें। क्योंकि समय किसी का इन्तजार नहीं करता। समय महान है।

॥ शिव वाणी ॥

जो अपने हृदय में मुझे बसा लेता है , वही मेरा अनन्य भक्त है।

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II

मेरे नाम का अर्थ ही कन्याण स्वरूप है। अगर कल्याण चाहिए तो मेरा नाम ले लो।

जो मेरा काम करे वो मेरा भक्त यानि ''शिवभक्त''।

जो मेरे भक्तों का काम नहीं करता मैं उसका कोई काम नहीं करता चाहे वह मुझे कितने ही बेलपत्र क्यों न चढायें।

भक्त प्रलयकाल में भी सुरक्षित रहता है।

॥ माता पार्वती का पति धर्म ॥

'माँ' शब्द ही अपने आप में सारा ब्रह्माण्ड है। माँ घरों मे भी है। मंदिरों मे भी है ,प्रकृति के रूप में भी है और सबसे बड़ी बात कि माँ का स्थान हमारे हृदय में है। आज की बेटी भी आने वाली कल की माँ है। भगवान भी इन्हें 'देवी' कहकर पुकारते है। यही कारण है कि महिलाओं के नाम के अंत में देवी लिखा जाता है।

हम माँ की पूजा करते है और पार्वती माँ अपनी पति शिव जी की पूजा करती है। माँ कहती है कि पति की सेवा ही परम धर्म है। पति ही व्रत, तप और तीर्थ है।

तीर्थार्थिनीः तु या नारी पतिपादोदकं पिबेत्।

तस्मिन् सर्वाणि तीर्थानि क्षेत्राणि च न संशयः॥

जिस नारी को तीर्थ की चाह हो वह अपने पति के चरणों को जल से धोकर पी जाय तो उसे तीनों लोकों के तीर्थो का पुण्य मिल जाता है। बिना पति की आज्ञा के कोई भी व्रत सफल नहीं होता। पतिव्रता स्त्री अपने माता - पिता और पति के कुलों की तीन - तीन पीढ़ियों को ताड़ देती है। पतिव्रता स्त्री का स्पर्श करके गंगा जल भी यह कहता है मैं दूसरों को पवित्र करने वाला बन गया।

यथा गंगावगाहेन शरीरं पावनं भवेत्।

IISHIVBHAKTT MAHAPURAN II

तथा पतिव्रतां दृष्टवा सकलं पावनं भवेत् ॥

पतिव्रता स्त्री का दर्शन करने के लिए तो भगवान भी वेष बदलकर पृथ्वी पर आते है।

पतिव्रता स्त्री के लिए एकमात्र पति ही ब्रह्मा, विष्णु और शिव से भी अधिक माना गया है। उसके लिए अपना पति शिवरूप ही है।

विधेर्विष्णोर्हराद्वापि पतिरेकोऽधिको मतः।

पतिव्रताया देवेशि स्वपतिः शिव एव च ॥

स्त्री अपने पति के भोजन कर लेने पर ही भोजन करें। जब पति खड़ा हो तो पत्नी को खड़ी ही रहनी चाहिए। प्रतिदिन अपने पति के सो जाने पर सोये और जगने के पहले ही जग जाये। यदि पति किसी कार्य से परदेश गया है तो श्रृंगार न करें। वह घर के दरवाजे पर देर तक खड़ी न रहे। दूसरे के घर न जाये। गोपनीय बात हर किसी से न कहे। यदि पति नपुंसक हो, दुर्गति में पड़ा हो, रोगी हो ,बूढ़ा हो ,सुखी अथवा दुःखी हो, किसी भी दशा में अपने पति को न छोड़े। स्नान करने के बाद सबसे पहले अपने पति का दर्शन करें। नंगी होकर न नहाये। घी , नमक,तेल आदि के खत्म हो जाने पर भी अचानक पति से न कहे।

जो स्त्री पति के कुछ कहने पर पति को कठोर उत्तर देती है , वह अगले जन्म में कुतिया बनती है। जो अपने पति को छोड़कर अकेले घूमती है , वह उलूकी होती है। जो पराये पुरूष को गलत दृष्टि से देखती है , वह ऐंचातानी होती है। जो पति को छोड़कर अकेले मिठाई खा ले वह सुअरी अथवा बकरी होती है। जो पति को तू कहकर बोलती है वह अगेले जन्म में गूंगी होती है।

पतिव्रता स्त्री तो विश्वनाथ शिव के प्रति भक्ति होने से ही प्राप्त होती है। वास्तव में गृहस्थ वही है ,जिसके घर में पतिव्रता स्त्री है। आजकाल की नारीयाँ तो अंतरंग कपड़े पहनकर बाजार घूमने जाती है। कलियुग की औरतें पति और परिवार की आज्ञा को न मानने वाली होगी। आज तो बिना चौखट के ही दरवाजे है। जब चौखट ही नही तो सीमा रेखा कैसी ? जो नारीयाँ घर की सीमा रेखा को तोड़ती है तथा पति की आज्ञा का उल्लंघन करती है वो मेरी तरह पिता दक्ष के हवन कुण्ड में समाहित हो जाती है।अर्थात् उनके जीवित रहने का कोई अर्थ नहीं रह जाता है।

पति ही शिव है। पत्नी ही शिवा है। दोनों माता - पिता है। और यह संसार के जीव उनके पुत्र है।

॥ सत्य वचन ॥

भक्त जिसकी भक्ति करें , उसे भगवान कहते है।

हम सब परमात्मा के पुत्र है।

सभी ईश्वर का एक परम ईश्वर अर्थात् 'परमेश्वर' है।

II SHIVBHAKT MAHAPURAN II

सभी आत्मा जिसमें लीन (एक) हो जाती है वह परम आत्मा अर्थात् परमात्मा है। (जैसे कई नदियाँ एक समुद में मिलती है।)

॥ शिवभक्त विष्णु ॥

कृष्णं नारायणं वन्दे कृष्णं वन्दे व्रजप्रियम्।

कृष्णं द्वैपायनं वन्दे कृष्णं वन्दे पृथासुतम्॥

|| SHIVMAHAPURAN ||

भगवान शिव जगत की रचना , पालन,संहार , अनुग्रह और तिरोभाव, ये 5 प्रबल कर्म करते रहते है।

सबसे पहले ब्रह्मा और विष्णु ने भगवान शंकर की पूजा की। इससे प्रसन्न होकर भगवान शंकर ने विष्णु जी और ब्रह्मा जी से कहा - आज का दिन एक महान दिन है। इसमें तुम्हारे द्वारा जो आज मेरी पूजा हुई है, इससे मैं तुम लोगों पर बहुत प्रसन्न हूँ। आज की यह तिथि 'शिवरात्रि' के नाम से विख्यात होकर मेरे लिए परमप्रिय होगी। इस प्रकार शिव जी ने अपने 2 कर्म पहला जगत पालन का कार्य अपने भक्त विष्णु जी को और दूसरा कर्म , जगत की रचना का अपने भक्त ब्रह्मा जी को दे दिया और शेष 3 कर्म संहार , अनुग्रह और तिरोभाव स्वयं करते है।

जो शिवभक्त , विष्णु जी अथवा ब्रह्मा जी से द्वेष करता है, वह नरक में गिरता है।

विष्णु जी के हृदय में शिव जी और शिव जी के हृदय में विष्णु जी रहते है। ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों एक है। जब विष्णु जी शयन करते है, उस समय शिव जी ही पृथ्वी की देख - रेख करते है। विष्णु जी को एक ऋषि के शाप के द्वारा पृथ्वी पर बार- बार जन्म लेना पड़ता है। काशी में शिवलिंग की पूजा करने पर शाप समाप्त हो जाता है। विष्णु जी भी शिवलिंग की पूजा कर शाप से मुक्त हुए है। भगवान विष्णु श्रीरंगक्षेत्र में सदा विराजमान रहते है।

भगवान विष्णु जी का वचन है कि मेरा अनन्य प्रेमी भक्त मुझे अपने स्वरूप बलरामजी, अर्धांगिनी लक्ष्मी और पुत्र ब्रह्मा से भी बढ़कर प्रिय है।

भक्ति भी कहती है -

'' हे कृष्ण ! गोविन्द ! हरे ! मुरारे ! हे नाथ ! नारायण ! वासुदेव ! ''

एवं स्वभक्तयो राजन भगवान भक्तभक्तिमान।

जैसे भक्त भगवान की भक्ति करते है , वैसे ही भगवान भी भक्तों की भक्ति करते है।

यदा - यदा हि धर्मस्य ग्लार्निभवति भारत।

अभ्युत्थानम् सृजाम्यहम् संभवानि युगे - युगे ॥

जब - जब पृथ्वी पर धर्म की हानि होती है तब - तब हर युग में धर्म के उत्थान के लिए विष्णु जी पृथ्वी पर अवतार लेकर अपने अनन्य भक्तों की रक्षा करते है।

विष्णु जी कलियुग के अन्त में 'कल्कि' अवतार लेकर शूद्र राजाओं , दुष्टों का, अधर्मियों का वध करेंगे।

विष्णु जी परम शिवभक्त है। विष्णु जी ही शिव जी के अनन्य भक्त है। विष्णु जी कहते है - संसार में जितने भी प्राणी है। वे सभी शिवभक्त है चाहे वे पेड़ - पौधे हो या मैं विष्णु या ब्रह्माजी या अन्य। सभी शिवलिंग की पूजा करते है। एक मात्र शिव जी ही साकार और निराकार (लिंग) रूप में रहते है।

जो भी भक्त विष्णु जी की पूजा द्वादशाक्षर मंत्र ''ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ''से करता है वह विष्णु जी का अनन्य भक्त बन जाता है। जहाँ विष्णु जी है वहीं माँ लक्ष्मी भी सदा निवास करती है।

II SHIVBHAKT MAHAPURAN II

॥ गुरू जी की वाणी – 'यथार्थ गीता' ॥

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णुः गुरूदैवो महेश्वरः ।

गुरू साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरूवे नमः ॥

प्रत्येक महापुरूष जो परमतत्त्व को प्राप्त कर लेता है, स्वयं में धर्मग्रन्थ है । उसकी वाणी का संकलन विश्व में कहीं भी हो शास्त्र कहलाता है, किन्तु कतिपय धर्मावलम्बियों का यह कथन है कि – ''जितना कुरान शरीफ में लिखा है उतना ही सच है । अब कुरान शरीफ नहीं उतरेगा ।'' ईसा मसीह पर विश्वास किये बिना स्वर्ग नही मिल सकता । वह ईश्वर का इकलौता बेटा था ।'' अब ऐसा महापुरूष नहीं हो सकता । उनकी रूढ़िवादिता है । यदि उसी तत्त्व का साक्षात्कार कर लिया जाए, तो वही बात फिर से होगी ।

5200 वर्षो के बाद मेरे पूजनीय गुरूजी परमहंस स्वामी श्री अड़गड़ानन्द जी महराज की वाणी 'यथार्थ गीता' में संकलित की गयी । गीता जीवन का एक रहस्य है । जिसने यथार्थ गीता पढ़ा , वह कर्मयोगी बना ।

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् ।

यः प्रयाति त्यजन्देह स याति परमां गतिम् ॥ (गीता 8/13)

''ओम् '' अक्षय परमात्मा का नाम है, उसका जप कर और ध्यान मेरा धर । एक ही कर्म है गीता में वर्णित एक परमात्मा की सेवा । यहीं पंक्ति योगेश्वर श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा था ।

महात्मा मूसा – तुमने ईश्वर से श्रद्धा हटायी, मूर्ति बनायी इससे ईश्वर नाराज है । प्रार्थना में लग जाओं ।

(यथार्थ गीता)

गुरूनानक – एक ओंकार सतगुरू प्रसादि ।

एक ओंकार ही सत्य है ,किन्तु वह सत्य गुरू की कृपा का प्रसाद है ।

परमात्मा को जानना है तो किसी तत्त्वदर्शी के पास जायें । 'यथार्थ गीता' धर्मग्रन्थ है । वेद कोई पुस्तक नहीं ,वेद तो हृदय में अवतरित होता है । वेद के माध्यम से परमात्मा ही बोलते है । 'यथार्थ गीता', 'शिवभक्त'आराधना करने के लिए कहती है । 'यथार्थ गीता' व ,'शिवभक्त' अन्य ग्रन्थों की भाँति

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

आपको स्वर्ग या नरक के द्वन्द्व में फँसाकर नहीं छोड़ता , बल्कि उस अमरत्व की प्राप्ति कराता है जिसके पीछे जन्म - मृत्यु का बंधन नहीं रह जाता ।

जब भावुकतावश कोई व्यक्ति मेरे गुरूजी के पास रहने का आग्रह करने लगता था ,तब वे कहते - ''जाओ शरीर से कहीं रहो ,मन से मेरे पास आते रहो । सुबह - शाम ओम् ,शिव, राम ईसा ,नबी ढाई अक्षर के नाम का जप करो और मेरे स्वरूप का हृदय में ध्यान करो । एक मिनट भी स्वरूप पकड़ लोगे, तो जिसका नाम भजन है वह मै तुम्हें दूँगा । इससे अधिक पकड़ने लगोगे , तो हृदय से रथी बनकर सदैव तुम्हारे साथ रहूँगा ।'' जब सुरत पकड़ में आ जाती हैं ,तो इसके बाद महापुरूष इतना ही पास में रहते हैं जितना हाथ - पाँव , नाक - कान इत्यादि आपके पास है । आप हजारों किलोमीटर दूर क्यों न हो , वह सदैव समीप है । मन में विचारों के उठने से भी पहले वे मार्गदर्शन करने लग जाते है ।

अनुरागी के हृदय में वह महापुरूष सदैव आत्मा से अभिन्न होकर जाग्रत रहते है । अर्जुन अनुराग का प्रतीक है । तथा श्रीकृष्ण एक योगेश्वर थे ।

'यथार्थ गीता' तथा 'शिवभक्त महापुराण - भोग और मोक्ष प्रदाता ... ' में आप पायेंगे कि आत्मा ही सत्य है । धर्म परमात्मा से मिलाने वाली क्रिया है । देवता गुण है । (जैसे चीनी का अर्थ मीठा है ।) अवतार व्यक्ति के हृदय में होता है, बाहर नहीं । क्या गीता का उपदेश देकर श्रीकृष्ण ने अर्जुन को सेना की योग्यता का बनाया ? वस्तुतः साधन लिखने में नही आता । सब कुछ पढ लेने के बाद भी चलना शेष ही रहता है । यही प्रेरणा 'यथार्थ गीता' है । यही प्रेरणा 'शिवभक्त महापुराण' है ।

शिवभक्त संतोष कुमार गुप्ता

॥ कदम दो कदम, चले प्रभु की ओर ॥

परमात्मतत्त्व का ज्ञान प्राप्त करना कठिन है । सब मनुष्यों को, जीवों को परमात्मा की ओर लौटकर जाना है । जब परमात्मा की ओर जाना ही है तो कल के बजाय आज क्यूं नहीं ।

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

मनुष्य अंत समय में गीता,कुरआन शरीफ , बाइबिल , शिवभक्त महापुराण आदि अनेकों वेद, पुराण पढ़ते है। क्या पता अंत समय में गीता पढ़ने को मिले न मिले। तो क्यूं न कल का कार्य आज कर ले, अपना लोक यानि परमात्मा का घर सुरक्षित कर लें। जो काम कल करना है वहीं काम आज कर ले तो खुश रहेंगे।

परमात्मा सत्य है। सत्य की राह में सत्य ही चलता है। सत्य सीधा चलता है। जबकि झूठ गोल - गोल पहिए की तरह घूमता है। एक दिन में 24 घंटे होते है। 24 घंटे प्रभु का नाम लेना जरूरी नहीं है। जरूरी यह है कि सुबह - शाम दवा की गोली की तरह , सुबह उठने के बाद और शाम सोने के पहले सिर्फ 2 बार प्रभु का नाम अवश्य लें। कलियुग में प्रभु का नाम लेने से ही सब पाप क्षीण हो जाते है।

सत्य सीधा और धीरे - धीरे चलता है। एक - एक कदम , दो - दो कदम ही प्रभु की ओर चलते रहे, रूके नहीं। परमात्मा सभी को सुधरने का मोहलत देते है। सुधर गये तो 'मोक्ष' है। नहीं तो कब सांसों की डोर वह रोक ले और पछिताने का मौका भी न मिले।

परमात्मा को पाने के लिए उसे जानना अत्यन्त आवश्यक है। परमात्मा को अपने हृदय में खोजे, न कि मंदिरों , मस्जिदों में। श्रीकृष्ण जी ने 'गीता' में अर्जुन से कहा है कि , अर्जुन ! '' ईश्वरः सर्वभूतानां हृदयेषु तिष्ठति। '' अर्थात् ईश्वर सभी जीवों के हृदय में निवास करता है। बस जरूरत है तो उसे पहचानने की। जिस दिन मनुष्य ईश्वर को पहचान लेता है। ईश्वर भी उससे बातें करने लगते है। निर्देष देने लगते है।

मनुष्य मोक्ष मार्ग के अलावा जिस रास्ते पर जाता है वह उसे दुःख ही देता है। परमात्मा में स्थित होना ही मुक्ति है। भक्ति तभी मुक्ति।

कबीर दास ने भी लिखा है '' इ जनम की बिगड़ी कबहु न सुधरी ''। मनुष्य जनम पाकर भी मुक्ति न मिले तो जीवन असफल है।

कदम दो कदम ही प्रभु की ओर चल दिया तो जीवन सफल है। इस संसार में मनुष्य , जीव परीक्षा देने आते है, जैसे - काम, क्रोध, मोह , लोभ आदि। जो इन परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाता है, वह संसार अर्थात् मृत्युयोनि से बाहर निकल जाता है। अन्यथा जन्मों - जन्म अनेक योनियों में भटकता ही रहता है ।

॥ हम होंगे कामयाब ॥

परमात्मा का नाम लेकर लक्ष्य की ओर आगे बढ़ना ही कामयाबी तक पहुँचना है। कर्म करते रहना ही कामयाब होना है। बढ़ते कदमों को न रोके। जब तक लक्ष्य तक न पहुँचें तब तक रूके नहीं। यह दृढ़ संकल्प करे, विश्वास करे कि या तो लक्ष्य मिले या मौत। इसके अलावा तीसरी चीज गँवारा नहीं। लक्ष्य को पाना ही कामयाब होना है।

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II

जिसका एक हाथ कर्म, दूसरा हाथ हिम्मत और ओठों पे परमात्मा का नाम हो ,उसका रास्ता तो भगवान भी नही रोकते। कामयाब होने के लिए सबसे पहले काबिल होना जरूरी है। आलोचनाओं से सीखे ,गलतियां इंसान को सीखाती है। काबिल इंसान गिरकर भी उठता है। और बड़े धैर्य से चलते हुए अपने लक्ष्य को पा लेता है। वह इंसान ही क्या जिसका लक्ष्य न हो। जिसका लक्ष्य नहीं वह कामयाब नहीं।

कामयाबी कर्म करने वाले इंसान की परीक्षा लेती है। कामयाबी का सफर काँटो भरा होता है। जिसने काँटों से प्रेम किया ,वही गुलाब है। जिसने काँटो पर मुस्कराते हुए चलना सीख लिया , काँटो पर सोना सीख लिया। उसे कामयाबी खुद आकर बांहों मे प्रेम से भर लेती है। खुदा की बाते बदलती नहीं, यही तो बड़ी कामयाबी है।

॥ कुरआन शरीफ की आयतें ॥

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम.

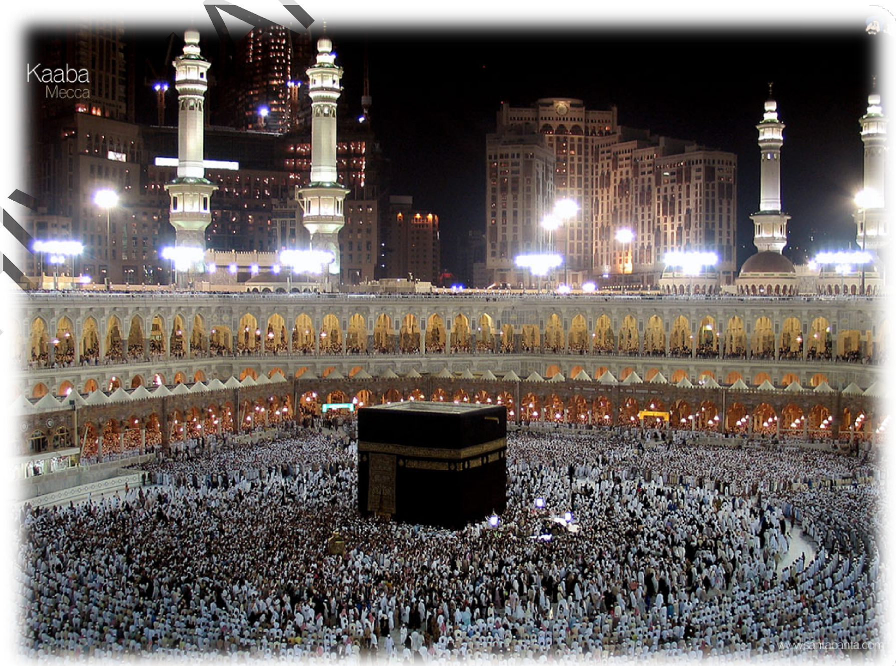

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

कुरआन पढ़ने वाले खास अल्लाह वाले होते है। जिसने कुरआन शरीफ का एक हर्फ पढ़ा तो उसको एक नेकी मिलेगी ,जो दूसरे कामों की दस नेकियों के बराबर होगी। कुरआन शरीफ रमजान के महीने में आसमान से अल्लाह के नुमाइंदों के लिए नाजिल हुई है। हम कुरआन शरीफ के हाफिज है इस का जमा करना और हिफाजत करना हमारे जिम्मे है। कुरआन शरीफ ठहर - ठहर कर पढ़े।

हजरत मूसा ने कहा- ऐ खुदा मेरे सीने को खोल दे और मेरे काम को मेरे लिए आसान फरमा और मेरी जुबान की गिरह खोल दे और लोग मेरी बात को समझे।

खुदा ने यह कहा है कि आखिरत का घर यानि जन्नत एक ऐसा मकाम है जिसका मालिक सिर्फ उन लोंगो को बनाऊँगा जो जमीन में विद्रोह के अपराधी न हो और जो दंगा न करते हों क्योंकि जन्नत पाक लोगों के लिए है।

या अय्युहन्नासुअ - बुदू रब्बकुमुल्लजी ख - ल - ककुम् वल्लजी - न मिन् कब्लिकुम् लअल्लकुम् तत्तकून ।

लोगों ! अपने खुदा की इबादत करो, जिसने तुमको और तुमसे पहले लोगों को पैदा किया , ताकि तुम उसके अजाब से बचो।

नमाज पढ़ा करो , जकात दिया करो और सिर्फ खुदा के आगे झुका करो।

खुदा को याद करो। जिस तरह अपने बाप - दादा को याद किया करते हो बल्कि उससे भी ज्यादा।

खुदा फसाद को पसन्द नहीं करता। खुदा जिसको चाहता है सीधा रास्ता दिखा देता है। खुदा के हुक्मों को हंसी न समझो। जो कुछ तुम्हारे दिलों में है खुदा को सब मालूम है। कुछ शक नहीं कि खुदा तुमलोगों पर मेहरबानी रखता है लेकिन ज्यादा लोग शुक्र नहीं करते। खुदा का शुक्र किया करो। जो अल्लाह की आयतों को पढ़ता है उनका दोस्त खुदा है कि उनको अंधेरे से निकालकर रोशनी में ले जाता है। हमें किसी भी पैगम्बर में कुछ फर्क नही करना चाहिए क्योंकि हम उसी एक खुदा के फरमांबरदार है। हम सब भाई - भाई है नही ,बल्कि हम सब भाई है।

जुय्यि - न लिन्नासि हुब्बुश्श - ह - वाति मिनन्निसा - इ वल्बनी - न वल्कनातीरिल् - मुकन्त - रति मिनजज - हबि वल्फिज्जति वल् - ख़ैलिल् मुसव्वमति वलअन्आमि वल्हर्सि जालि - क मताअुल - हयातिद्दुन्याऽवल्लाहु अिन्दहु हुस्नुलमआब।

लोगों को उनकी ख्वाहिशों की चीजें यानि औरतें, बेटे, सोने - चाँदी के ढेर और निशान लगे हुए घोड़े - मवेशी और खेती - बाड़ी जीनतदार मालूम होती है। मगर ये सब दुनिया ही की जिन्दगी के सामान है। खुदा के पास अच्छा ठिकाना है।

सबको खुदा की तरफ लौटकर जाना है। हाथों में हाथ लेकर कदम दो कदम चले खुदा (प्रभु) की ओर...

IISHIVBHAKTI MAHAPURANII

॥ प्रभु आइये ॥

तेरे दर्शन को अँखियां तरसे रे तरसे
आ जाइये प्रभु आ जाइये ।
शिवभक्त बुलाये भगवन न आये ,
ऐसा न कीजै , आ जाइये ॥

पेड़ों मे आइये ,पत्तों में आइये
भक्तों के दिल मे उतर जाइये ।
भूखों को अन्न देने के वास्ते
प्रसाद बनकर आ जाइये ॥
शिवभक्त बुलाये भगवन न आये ,
ऐसा न कीजै , आ जाइये ॥

हवा में भी तू , जल में भी तू है
बनकर अमृत बरस जाइये ।
शिव को मनाने शिवभक्त है आये ,
गुस्सा न कीजै , जाग जाइये ॥
शिवभक्त बुलाये भगवन न आये ,

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

ऐसा न कीजै , आ जाइये ॥

ब्रह्मा को लेकर विष्णु को लेकर
माता को लेकर आ जाइये ।
जो भी तुझे दिल से पुकारे ,
उसके मन में समा जाइये ॥
शिवभक्त बुलाये भगवन न आये ,
ऐसा न कीजै , आ जाइये ॥

हाथ जोड़ तेरे चरणों में बैठे
मान जाइए प्रभु मान जाइये ।
देर न कीजै , भक्तजन है पुकारे
दौड़े - दौड़े प्रभु आ जाइये ॥
शिवभक्त बुलाये भगवन न आये
ऐसा न कीजै आ जाइये ॥

तेरे दर्शन को अँखियां तरसे रे तरसे
आ जाइये प्रभु आ जाइये ।
शिवभक्त बुलाये भगवन न आये ,
ऐसा न कीजै , आ जाइये ॥
॥ खुश रहो ॥

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

Shivbhaktt Mahapuran
A Enjoyment & Salvation Giver ...
Lord God is Old and We must Serve Him